Insaani farishta [Hindi]

Himanshu Gupta

2nd Semester BSc Radiography, University College of Medical Sciences, Delhi
Corresponding Author:
Himanshu Gupta
UCMS, Delhi, 110095, India
Email: aggarwalhimanshu707 at gmail dot com

Received: 18-APR-2020 Accepted: 19-APR-2020 Published Online: 20-APR-2020

Artist:
Pachay, Graphic Designer

Image source: https://www.facebook.com/Debcati/posts/10158276886511944

क्यों बैठा है मायूस वो सबसे अलग थलग
ऐसा ना हो कहीं वो ये जंग हार न जाये

घरवालों से बच्चों से भी सबसे हुआ जुदा
तन्हाई का ये ग़म उसे अब मार न जाये

वो है तो परेशान मगर रहती है फ़िक्र
जो आए मेरे पास फिर बीमार न जाये

अगर ये हुआ बचा ले वो तुमको तो मरने से
पर उसका अपना खो कहीं संसार न जाये

आया है ये फरिश्ता जो डॉक्टर की शक्ल में
बीमारी ये कहीं उसे ही मार न जाये

Acknowledgment: This poem was submitted to "Picturesque: The COVID Contract" hosted online by Parwaaz, the poetry society of University College of Medical Sciences, Delhi, in April 2020

Cite this article as: Gupta H. Insaani farishta [Hindi]. RHiME. 2020;7:49.